हिंदी ई -बुक

जब हिंदी भाषा ने मुझे चुना

डॉ गार्गी सिन्हा

अक्सर हम कहते है हमने अपनी भाषा को चुना। हम सोचते है कौन सी भाषा में हम वार्तालाप करे और उसी अनुसार भाषा का चयन करते है। मेरी बाल्यकाल की भाषा हमेशा ही हिंदी रही। परन्तु माँ की डाँट हमेशा बांग्ला भाषा में ही खाई। यू कहा जा सकता है , दोनों भाषाओं ने मेरा ध्यान बहुत ही प्यार से रखा। इसी बीच एक भाषा और थी जिसने भरी भीड़ में मेरी बेईज़्ज़ती करने में कोई कसर न छोड़ी थी। जिसके साथ मेरा बचपन से एक बैर भाव रहा , वो थी अंग्रेज़ी भाषा या सही तरीके से कहे तो इंग्लिश लैंग्वेज। कई बार लगता था ये अंग्रेजी ने मुझ से रूठे रहने का मन बना कर रखा है। खैर नियति की अपनी गति। अंग्रेज़ी ने मुझे लिखने के पर्याप्त साधन और अवसर प्रदान करने शुरू कर दिए थे। इसी बीच हिंदी को शायद मैं नज़रअंदाज़ कर रही थी। पर हिंदी मुझ पर हमेशा ही अपनी कृपादृष्टि रखती रही। इसी बीच मेरे बच्चों को हिंदी सिखने का शौक लगा। अब ऑस्ट्रेलिया के हिंदी जगत में बच्चो को अपनी पहचान बनानी थी तो उन्हे गुरु याद आया - अपनी माँ। बस फिर क्या था पूरा घर हिंदी भाषा ज्ञान केंद्र में बदल गया। जो जिद हम अंगेज़ी सीखने में दिखते थे वो मेरे बच्चे हिंदी सीखने में दिखते है। सचमुच हिंदी ने एक अद्भुत सामंजस्य मेरे घर में स्थापित कर दिया और कही हिंदी ने मुझे चुना अपने लिए !